



19

किन्नौर देश की ओर

रामपुर (हिमाचल प्रदेश में स्थित) से 17 मई को प्रस्थान किया। यद्यपि मेरे पास एक ही खच्चर का सामान था, किंतु पहाड़ में अकेला खच्चर ले नहीं जाया जा सकता, इसलिए सामान के लिए दो खच्चर और सवारी के लिए एक घोड़े का प्रबंध किया था। अभी कुछ दूर ही गए होंगे कि घोड़ा ठमकने लगा। साथ चलने वाले लड़के से पूछा — 'घोड़े की पीठ तो कटी



नहीं है?' लड़के ने पहले इधर-उधर करना चाहा, किंतु जोर देने पर बोला — 'हाँ, पीठ कटी है।' मैंने घोड़े को लड़के के हवाले करके कहा— 'इसे तुरंत अस्तबल में ले जाकर दूसरा घोड़ा बदलकर ले आओ। मैं गौरा में प्रतीक्षा करूँगा।'

तीन-साढ़े तीन घंटे में गौरा डाक बंगले में पहुँच गया। गौरा रामपुर से ढाई हजार फीट से अधिक ऊँचा है, इसलिए रास्ते में चढ़ाई भी पड़ी। दो-तीन घंटे में घोड़े के आ जाने की पूरी



उम्मीद थी किंतु घोड़ा कहाँ आने वाला था? रास्ता भी कड़ी चढ़ाई, उतराई का था। धूप भी तेज थी। मत पूछिए, अंतिम चार मील ने क्या गति बना दी किंतु हिम्मत छोड़ने की बात न थी। रास्ते में बुशहरी नारियाँ डाँडेपर के किसी मेले से खूब बनी-ठनी लौटी आ रही थीं, कोई गीत गा रही थी, किंतु यहाँ देखने-सुनने के लिए दिल कहाँ था? आगे बढ़ तो रहा था, किंतु हर पाँच घंटे पर जान पड़ता

था। फिर भी, 21 मील की यात्रा करके सूर्यास्त के समय सराहन के डाक बंगले पर पहुँच गया।



बगला बंद था। मालूम हुआ चौकीदार साहब मेला गए हुए हैं, आज रात को शायद ही खैर, कोली बूढ़ा कुछ बीमार था, इसलिए वह मेला न जा सका था, नहीं तो उस थकान भरा रात हजार फीट की ऊँचाई पर रात में बाहर घास पर बैठना बहुत प्रिय नहीं लगता। बूढ़ा कोली से कुर्सी ले आया। पूछताछ करने पर मेट के पास चाभी निकल आई। थोड़ी देर बाद देवतराम भी खच्चरों को हाँके आ पहुँचे। जान पड़ता था, वह हमसे भी अधिक थके-मौंदे हैं।



दोपहर को छाछ भर पिया था इसलिए भूख तो लगनी ही ठहरी, किंतु इस समय थोड़ा लेट जाने का ख्याल था। हमें सबसे ज्यादा चिंता थी कल की यात्रा की। अगले दिन पैदल चलने की शक्ति नहीं थी।

अभी हम किन्नौर देश नहीं पहुँचे। अभी तीन एक मील और चलना पड़ा। मान्योरी की धार आई। यहाँ से हम असली किन्नौर देश में दाखिल हुए। यहाँ पर स्त्रियाँ ऊर्ण सारी पहने थीं। हाँ, ऊर्ण सारी को ऊनी साड़ी न मान लीजिए। यह काफी लंबा-चौड़ा पतला कंबल होता है, जिसे स्त्रियाँ दाहिना कंधा खोले काँटे से इस प्रकार पहनती हैं, कि सिर को छोड़कर सारा शरीर ढक जाता है। किन्नौर देश की स्त्रियाँ पुरुषों की भाँति टोपी लगाती हैं, जिसके तीन भाग में उठे कनपटे जाड़ों में नीचे गिरकर कनटोप का काम देते हैं।

बंगला बंद था। मालूम हुआ चौकीदार साहब मेला गए हुए हैं, आज रात को शायद ही खैर, कोली बूढ़ा कुछ बीमार था, इसलिए वह मेला न जा सका था, नहीं तो उस थकान सात हजार फीट की ऊँचाई पर रात में बाहर घास पर बैठना बहुत प्रिय नहीं लगता। बूढ़ा से कुर्सी ले आया। पूछताछ करने पर मेट के पास चाभी निकल आई। थोड़ी देर बाद कलराम भी खच्चरों को हाँके आ पहुँचे। जान पड़ता था, वह हमसे भी अधिक थके-माँदे हैं।



दोपहर को छाछ भर पिया था इसलिए भूख तो लगनी ही ठहरी, किंतु इस समय थोड़ा लट जाने का ख्याल था। हमें सबसे ज्यादा चिंता थी कल की यात्रा की। अगले दिन पैदल चलने की शक्ति नहीं थी।

अभी हम किन्नौर देश नहीं पहुँचे। अभी तीन एक मील और चलना पड़ा। मान्योरी की धार आई। यहाँ से हम असली किन्नौर देश में दाखिल हुए। यहाँ पर स्त्रियाँ ऊर्ण सारी पहने थीं। हाँ, ऊर्ण सारी को ऊनी साड़ी न मान लीजिए। यह काफी लंबा-चौड़ा पतला कंबल होता है, जिसे स्त्रियाँ दाहिना कन्धा खोले काँटे से इस प्रकार पहनती हैं, कि सिर को छोड़कर सारा शरीर ढक जाता है। किन्नौर देश की स्त्रियाँ पुरुषों की भाँति टोपी लगाती हैं, जिसके तीन भाग में उठे कनपटे जाड़ों में नीचे गिरकर कनटोप का काम देते हैं।



रास्ता तिब्बत-हिंदुस्तान सड़क का था और वह बहुत परिश्रम से बनाया गया था। शक नहीं, किंतु वह कितनी ही जगहों पर कठिन था। हम आसानी से दुकान और सराय के पहुँच गए। सराय के धुपहले और शायद खटमल-पिस्सुओं से भरे बरौंडे को न पसंद की। दुकान की छाँह पसंद की।

दुकान में काफी आलू पड़े थे और गुड़ पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। खरीदने की वहाँ कोई चीज नहीं थी। पास के कटे खेत में अपनी राबरी डाले खंपा पड़े थे। खम तिब्बत में चीन की सीमा पर एक प्रदेश है। शायद इनके पूर्वजों में से कुछ किसी समय खम से खानाबदोशी करने इधर आए हों। इन लोगों का कहीं घर नहीं है। इनका काम है छोटा-मोटा सौदा खरीदकर इधर से उधर बेचना। जाड़ों में ये मंडी, शिमला, हरिद्वार, दिल्ली तक पहुँचते हैं और गर्मियों में सतलज और गंगा की घाटियों से पश्चिमी तिब्बत।



पास में खड़े खंपा बच्चों को देखकर मैंने उनसे तिब्बती भाषा में कुछ कहा। उनके चेहरे खड़े हो गए। एक तरुण और उसकी माँ पास आई। तिब्बती भाषा में बात करते देखकर आश्चर्य हुआ। मैं बनिये के आदमी से पीने के लिए पानी माँग रहा था। तरुण ने कहा— 'पानी लाता हूँ। यद्यपि मैं केवल ठंडा पानी चाह रहा था, किंतु तरुण के सत्कार को कैसे इकरा सकता था ? माँ चाय बनाने चली गई। मैं तरुण से बातचीत करने लगा। मेरी दृष्टि लज्जित, स्वच्छ, स्वस्थ और प्रसन्न मुँह पर थी। उन्हें देखकर मेरे मन में भी यह ख्याल उठा— इन्हीं की भाँति निर्द्वंद्व हो गदहा, खच्चर और तंबू लिए एक देश से दूसरे देश में घूमूँ। काश ! मैं कभी बरस का हो जाता, फिर इसी तरुण से कहता— लो दोस्त ! अब मुझे भी अपने परिवार में शामिल कर लो।

शाम तक हमें नचार पहुँचना था। हम धीरे-धीरे आगे बढ़े। अब चढ़ाई थी। चढ़ाई करने के बाद अब हम देवदारों के सुंदर वन में थे। सारे रास्ते का यह सबसे सुंदर भाग था।

पर्वत सदा हरे रहने वाले देवदारों
 ढँका था। बीच-बीच में कुछ गाँव भी
 थे। एक गाँव सड़क से नीचे पारस ही
 जिसमें मंदिर था। अठारह बीस
 का सुडरा गाँव यही है। इसी के
 किसी गुफा में बाणासुर की भार्या
 सत संतानों को जन्म दिया था।



23 मील की यात्रा पूरी करके
 ढे पाँच बजे हम नचार पहुँचे।
 बंगले में रुके। रात को मैं
 खाना से सोया। वहाँ ढिल्लन साहब
 थे। ढिल्लन साहब ने बताया -

इधर बहुत भालू हैं। वह आदमी को कम किंतु गाय, भेड़, बकरी को मारकर खा जात
 है। ज्यादातर काले भालू हैं, किंतु ऊपर कंडों में भूरे भालू भी सुने जाते हैं। देर तक दिमाग
 यह-तरह के विचारों में डूबा रहा कि यह घोर जंगल है। यदि भालू इधर आ जाए तो ! अंत
 नींद आ गई। भालू सपने में भी नहीं आए।

सबरे हाथ धोकर ढिल्लन साहब के यहाँ चाय पी। स्नान की बात मत पूछिए। सप्ताह
 एक बार स्नान मैं यहाँ के लिए पर्याप्त समझता हूँ, नहीं तो हिमालय की पवित्र वायु का
 स्नात्म्य ही क्या रहेगा ? नचार से तीन मील वाड़तू के पुल तक उतराई ही उतराई।

वाड़तू बंगले पर कोई घंटा भर में पहुँच गए। अब आठ मील और रहते थे। यहाँ विश्राम
 करने के लिए काफी समय था। अभी कल का भोजन पच नहीं पाया था। अतः पानी ही पिया।
 ढाँ के चश्मे के शीतल मधुर जल को अमृत कहना अत्युक्ति न होगी। बंगले के आस-पास
 ढँदी-नीची जमीन है। दो-तीन चूली (खुबानी) के वृक्ष भी थे। चार घंटा विश्राम के बाद चलने
 का निश्चय किया।

— राहुल सांकृत्यायन



राहुल सांकृत्यायन का जन्म (9 अप्रैल 1893 — 14 अप्रैल 1963) उत्तर प्रदेश के
 आजमगढ़ जनपद में हुआ। ये हिंदी के प्रमुख साहित्यकार थे। राहुल सांकृत्यायन ने
 देश-विदेश की यात्राएँ कीं एवं हिंदी में 'यात्रावृत्तांत' को साहित्य की मान्य विधा के
 रूप में स्थापित किया। ये छत्तीस भाषाएँ लिख, पढ़ एवं बोल सकते थे। 'वोल्गा से
 गंगा', 'मेरी जीवन यात्रा' इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।



शब्दार्थ

किन्नौर देश = हिमाचल प्रदेश का एक रमणीक भाग जो तिब्बत की सीमा पर बसा है।

अभ्यस्त = जिसने अभ्यास किया हो, कुशल

ठमकना = चलते-चलते रुक-रुक जाना

खानाबदोश = जिनका कोई घर, ठौर ठिकाना न हो

निर्द्वंद्व = बिना द्वंद्व के (बिना लड़ाई-झगड़े के)

सत्कार = आदर-सम्मान

अत्युक्ति = बढ़ा-चढ़ा कर कहना

भार्या = पत्नी

गत = दशा

माहात्म्य = महत्त्व

चश्मा = झरना

1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए -

(क) लेखक ने यात्रा में यातायात के किस साधन का उपयोग किया और क्यों ?

(ख) थोड़ी दूर चलते ही क्या घटना घटी और इससे लेखक के किस गुण का पता चलता है ?

(ग) सराहन के डाक बँगले पर पहुँचते समय लेखक की दशा का वर्णन कीजिए।

(घ) देवदारों के घने वन में चलते समय लेखक के मन में क्या-क्या विचार आ रहे थे ?

(ङ) लेखक ने किन्नौर प्रदेश की स्त्रियों के पहनावे की क्या विशेषताएँ बताई हैं ?

2. सोच-विचार : बताइए -

(क) यदि आप को कभी पहाड़ों पर जाने का अवसर मिले तो आप क्या तैयारी करेंगे ?

(ख) पहाड़ी जनजीवन और मैदानी जनजीवन में क्या समानता और क्या अंतर है ?

3. अनुमान और कल्पना -

(क) यदि रास्ते में खच्चर बीमार हो जाता तो लेखक अपनी यात्रा कैसे पूरी करते ?

(ख) लेखक को देवदार के सघन वन में चलने में बड़ा आनंद आ रहा था, क्यों ?

4. भाषा के रंग -

(क) नीचे लिखे शब्दों को बोलते हुए अपनी कॉपी में लिखिए -

सांकृत्यायन, विद्याधर, निर्द्वंद्व, माहात्म्य, मान्योरी, क्वार्टर, ग्यगर, वाङ्मय, अत्युक्ति

(ख) उदाहरण के अनुसार उपयुक्त शब्दों को जोड़कर वाक्य पूरा कीजिए -

घोड़ा ठमकने लगा।

बिजली चमकने लगी।

पानी

कोयल

पक्षी

बादल

कुत्ते

मेढक

(ग) नीचे दिए गए शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
अकेला, निश्चित, विश्राम, अभ्यस्त, हिमालय

(घ) नीचे दिए गए वाक्यों को ठीक करके लिखिए —

- ले नहीं जाया जा सकता पहाड़ में अकेला खच्चर।
- मालूम हुआ मेला गए हुए हैं चौकीदार साहब।
- धीरे-धीरे आगे बढ़े हम।

(ङ) पढ़िए, समझिए और करिए —

ऊँची और नीची —	ऊँची-नीची	रात और दिन	—	रात-दिन
आगे और पीछे —		आस और पास	—	
अंदर और बाहर —		राजा और रानी	—	

तुम्हारी कलम से —

अपनी किसी यात्रा के विषय में लिखिए —

- कहाँ गए थे ?
- क्या-क्या तैयारियाँ की थीं ?
- किस साधन से गए थे ?
- रास्ते में क्या-क्या देखा ?
- उस स्थान की खास-खास बातें।

अब करने की बारी —

(क) लेखक ने जिन-जिन स्थानों की यात्राएँ कीं, वह कहाँ-कहाँ स्थित हैं ? उन्हें मानचित्र में भी ढूँढ़िए।

(ख) आपके आस-पास कुछ लोग ऐसे होंगे जिन्होंने कभी पहाड़ी यात्राएँ की होंगी। उनके अनुभवों को सुनिए और अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

7. मेरे दो प्रश्न : पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए —

1.
2.

8. इस पाठ से —

- (क) मैंने सीखा —
- (ख) मैं करूँगी/करूँगा —

